1 कुरिन्थियों

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की
इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के
लिए बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की
ओर से 2 उस चर्च के नाम जो कुरिन्थुस में है,
अर्थात् उनके नाम जो मसीह में अलग किए
गए और अलग होने के लिए बुलाए गए हैं।
3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु
मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति
मिलती रहे।
4 मैं तुम्हारे बारे में अपने परमेश्वर का सदा
धन्यवाद करता हूँ इसलिए कि परमेश्वर
का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ
5 कि उन्हीं[a] की वजह से तुम लोग हर बात
में अर्थात् बोलने में और सारे ज्ञान में बहुत
बढ़ गए। 6 यही यीशु मसीह की सच्चाई का
सबूत है। 7 तुम में किसी वरदान की कमी नहीं
है और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दूसरी
बार आने का इन्तज़ार भी करते हो। 8 वह
तुम्हें आखिर तक मज़बूत रखेंगे कि तुम हमारे
प्रभु यीशु मसीह के आने पर निर्दोष[b] खड़े रह
सको। 9 परमेश्वर विश्वसनीय हैं, जिन्होंने
तुम्हें अपने बेटे, हमारे प्रभु यीशु मसीह के
साथ हिस्सेदार होने के लिए[c] बुलाया है।
10 हे भाईयो बहनो, मसीह यीशु जो हमारे
प्रभु हैं, उनकी तरफ़ से मैं बिनती करता हूँ कि
तुम एक मत रखो, तुम में फूट न हो और एक
उद्देश्य रख कर एकता बनाए रहो। 11 खलोए
के परिवार के लोग मुझे बता चुके हैं, कि तुम
लोग आपस में लड़ रहे हो। 12 तुम में से कुछ
लोग अपने आपको पौलुस, कुछ अपुल्लोस,
कुछ कैफ़ा और कुछ मसीह का अनुयायी
बता रहे हैं।
13 क्या यीशु मसीह बँट गये हैं? क्या
पौलुस के नाम में तुम्हें बपतिस्मा दिया गया
था? 14 परमेश्वर की बड़ाई हो कि क्रिस्पुस
और गयुस को छोड़कर तुम में से किसी
और व्यक्ति को मैंने बपतिस्मा नहीं दिया;
15 ताकि कहीं ऐसा न हो कि कोई यह
कहे कि उसका बपतिस्मा मेरे नाम से हुआ
है। 16 मैंने स्तिफ़नास के परिवार को भी
बपतिस्मा दिया, इसके अलावा मुझे याद
नहीं कि किसी और को मैंने बपतिस्मा दिया।
17 इसलिए कि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने
नहीं बल्कि सुसमाचार[d] सुनाने को भेजा
है-वह भी चतुराई दिखाने के लिए नहीं ताकि
लोगों का ध्यान मसीह के क्रूस से हट जाए।
18 क्रूस की सच्चाई नाश हो जाने वाले लोगों
के लिए बेवकूफ़ी है, लेकिन हम मुक्ति पाने
वालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य[e] है।
19 लिखा है कि "मैं ज्ञानियों के ज्ञान को
नाश कर डालूँगा और बुद्धिमान लोगों की
बुद्धिमानी को रद्द कर डालूँगा।"
20 कहाँ रहा बुद्धिमान? कहाँ गया मूसा
की किताबों का विशेषज्ञ? इस युग का
दर्शनशास्त्री कहाँ है? क्या परमेश्वर ने इस
दुनिया के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया है?
21 परमेश्वर ने अपनी बुद्धिमानी के अनुसार
कभी यह नहीं चाहा कि इस दुनिया के ज्ञान
से लोग उन्हें जानें। परमेश्वर को यह ठीक
लगा कि[f] दिए गए संदेश की मूर्खता के द्वारा

---

[a] **1.5** यीशु [b] **1.8** बिना किसी आरोप के [c] **1.9** या संगति में [d] **1.17** खुशी की खबर [e] **1.18** शक्ति
[f] **1.21** हमारे

उनको अपराध-क्षमा दें, जो विश्वास करेंगे।
22 यहूदी लोग अजीब चिन्ह की माँग करते
हैं और यूनानी ज्ञान की बातों के पीछे पड़े
रहते हैं। 23 लेकिन हम उस क्रूस पर चढ़ाए
गए मसीह के बारे में बताते हैं जिस से
यहूदी नाखुश होते हैं और जिसे दूसरे सभी
लोग मूर्खता समझते हैं। 24 जिन्हें बुलाया
गया है, चाहे वे यहूदी हों या यूनानी उनके
लिए मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और ज्ञान
हैं। 25 बेकार[a] दिखने वाली परमेश्वर की
योजना, इन्सानी योजना से बढ़ कर और
परमेश्वर की कमज़ोरी मनुष्यों के बल[b] से
कहीं ज़्यादा है।

26 भाईयो-बहनो, याद करो, जब तुम्हें
बुलाया गया, उस समय दुनिया की दृष्टि में
तुम में से कुछ ही बुद्धिमान समझे जाते थे और
कुछ ही दौलतमंद और प्रभावशाली जाने
जाते थे। 27 लेकिन परमेश्वर ने उन लोगों
का चुनाव किया जो संसारिक दृष्टिकोण से
मूर्ख समझे जाते थे ताकि ज्ञानवान शर्मिन्दा
किए जाएँ। और उन्हें भी जिन्हें संसार निर्बल[c]
समझता है, ताकि बलवान[d] लज्जित हो
जाएँ। 28 परमेश्वर ने इस दुनिया में नीच,
तुच्छ और शून्य समझे जाने वालों को चुन
लिया, ताकि जो बड़े समझे जाते हैं, उन्हें
कुछ न समझा जाए। 29 ताकि कोई भी
व्यक्ति परमेश्वर के सामने अहंकार[e] न
करे। 30 परमेश्वर ने तुम्हें यीशु से जोड़ दिया
है जो हमारे लिए परमेश्वर की तरफ़ से
ज्ञान, खराई, शुद्धता और छुटकारा ठहरे हैं।
31 ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि "जो
घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे।"

2 भाईयो-बहनो, जब मैं परमेश्वर का भेद
सुनाने तुम्हारे पास आया था, तो उपदेश
देने की योग्यता आकर्षक शब्दों और ज्ञान के
साथ नहीं आया था। 2 उस समय मेरा फ़ैसला
यह था कि क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह के
अलावा और किसी विषय पर चर्चा न करूँ।
3 मैं कमज़ोरी और डर के साथ थरथराता
हुआ तुम्हारे साथ रहा था। 4 मेरी भाषा और
उपदेश में ज्ञान की लुभाने वाली बातें नहीं
थीं। मेरा संदेश पवित्र आत्मा की शक्ति[f]
का सबूत था। 5 इसलिए कि तुम्हारा भरोसा
इन्सानी ज्ञान के ऊपर नहीं, लेकिन परमेश्वर
की शक्ति पर टिक जाए।

6 हम समझदार लोगों के बीच बुद्धि की
बातें कहते हैं, लेकिन इस दुनिया और दुनिया
के शासकों की बुद्धि नहीं जो कुछ समय बाद
रहते ही नहीं हैं 7 परन्तु हम परमेश्वर के उस
ज्ञान के भेद को बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने
सृष्टि के पहले ही से[g] हमारी महिमा के लिए
निश्चित कर दिया था। 8 इस युग के किसी
भी शासक ने इस सच्चाई को न जाना। यदि
ऐसा होता तो वे तेजोमय प्रभु[h] को क्रूस की
सज़ा न देते। 9 लेकिन जैसा लिखा है, "जो
बातें आँख ने नहीं देखीं, कान ने सुनीं नहीं
और जो कुछ मनुष्य के मन में नहीं समाईं[i]
वह सब परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों
के लिए तैयार की हैं।"

10 वह सब परमेश्वर ने अपने पवित्र
आत्मा के द्वारा हमें बता दिया है। क्योंकि
परमेश्वर का आत्मा सब कुछ वरन्,
परमेश्वर की गहराई की बातों को जाँचता[j]
है। 11 एक व्यक्ति की आत्मा के अलावा

---

[a] **1.25** मूर्ख [b] **1.25** इन्सानी ताकत [c] **1.27** छोटा [d] **1.27** बड़े समझे जाने वाले [e] **1.29** घमण्ड
[f] **2.4** सामर्थ [g] **2.7** सनातन से [h] **2.8** यीशु [i] **2.9** दिमाग ने सोची नहीं [j] **2.10** ढूँढता

उसके बारे में कौन जान सकता है। इसी तरह
परमेश्वर के आत्मा को छोड़कर परमेश्वर
की बातों को कोई नहीं जान सकता। 12 हम
ने इस दुनिया का आत्मा नहीं, लेकिन वह
आत्मा पाया है जो परमेश्वर की तरफ़ से है,
ताकि हम परमेश्वर द्वारा मुफ़्त मिलने वाली
बातों को जान सकें। 13 मानवीय बुद्धि के
द्वारा सिखाए गए शब्दों से हम इन बातों को
नहीं कहते हैं। आत्मिक लोगों को आत्मिक
बातें हम उन शब्दों से बताते हैं जो पवित्र
आत्मा से दिए जाते हैं। अर्थात् आत्मिक
विचारों को आत्मिक शब्दों से मिला कर
सुनाते हैं। 14 शारीरिक जन परमेश्वर के
आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता है,
क्योंकि उसके लिए वे बेवकूफ़ी की बातें हैं।
इसलिए कि उन्हें आत्मिक तरीके से जाना
जाता है, वह उन्हें समझ[a] नहीं सकता है।
15 आत्मिक जन हर बात की पहचान रखता
है, लेकिन उसे लोग समझ नहीं पाते हैं।
16 "कौन प्रभु के विचारों[b] को जान सकता
है या उन्हें सलाह दे सकता है?" लेकिन हम
में मसीह के समान मन[c] है।

3 भाईयो-बहनो, आत्मिक लोगों की तरह
मैं तुम से बातें न कर सका। मैं तुम से
शारीरिक या मसीह में शिशुओं की तरह ही
बातें कर सका। 2 ठोस खाने के बजाए, मैंने
तुम्हें पीने के लिए दूध दिया था, क्योंकि तुम
मेरा भोजन खाने के लायक नहीं थे। सच
पूछा जाए, तो अभी भी तुम तैयार नहीं हो।
3 अभी तक तुम शारीरिक हो। इसलिए जब
कि तुम्हारे बीच अब तक ईर्ष्या और झगड़े
हैं, तो तुम क्या अविश्वासियों की तरह पुराने
स्वभाव में नहीं जी रहे हो? 4 जब तुम में
से एक कहता है, "मैं पौलुस का हूँ" दूसरा
कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ" तो क्या तुम
संसारिक मनुष्य की तरह नहीं हो?
5 पौलुस और अपुल्लोस कौन है? मात्र
सेवक जिन के द्वारा तुमने विश्वास किया है।
प्रभु ने जो काम हमें दिया, हम ने किया। 6 बोने
का काम मैंने किया था और अपुल्लोस ने
सींचने का, लेकिन बढ़ाने का काम परमेश्वर
ने किया। 7 इसलिए न बोने वाला कुछ है
न सींचने वाला, क्योंकि बढ़ाने वाले तो
परमेश्वर ही हैं। 8 बोने वाले और सींचने
वाले का मकसद एक ही होता है, लेकिन
हर जन अपनी मेहनत के अनुसार मजदूरी
पाएगा। 9 हम परमेश्वर के साथ काम करने
वाले हैं। तुम परमेश्वर की खेती और रचना
हो।
10 मैंने परमेश्वर के अनुग्रह[d] की वजह से
एक योग्य राजमिस्त्री की तरह नींव रखी।
दूसरा उसके ऊपर बनाता जाता है। बनाते
समय उसे चाहिए कि सावधानी बरते।
11 यीशु मसीह को छोड़कर जो नींव हैं कोई
दूसरी नींव नहीं रखी जा सकती है। 12 यदि
कोई इस नींव पर सोना, चाँदी, कीमती
पत्थर, लकड़ी या घास-फूस रखता है 13 तो
हर एक का काम उस दिन दिख जाएगा,
क्योंकि वह दिन प्रकट कर देगा। ऐसा आग
के कारण होगा। आग ही जाँचेगी, कि हर
एक जन ने कैसा काम किया है। 14 नींव
पर बना हुआ काम यदि बचा रहेगा तो
बनाने वाले को मज़दूरी मिलेगी। 15 यदि वह
काम जल जाएगा, तो बनाने वाला नुकसान
उठाएगा। बनाने वाला तो बच जाएगा लेकिन
इस तरह जैसे कोई लपटों से बच जाता है।
16 क्या तुम्हें नहीं मालूम कि तुम परमेश्वर
का भवन हो और परमेश्वर का आत्मा
तुम्हारे भीतर रहता है। 17 यदि कोई परमेश्वर

[a] **2.14** परख [b] **2.16** मत [c] **2.16** रवैय्या [d] **3.10** असीम कृपा

के भवन को बर्बाद करे, परमेश्वर उस
व्यक्ति को बर्बाद करेगा। इसलिए कि
परमेश्वर का भवन पवित्र है और तुम्हीं वह
भवन हो।
18 गलत या झूठे विचारों को मन में जगह
मत दो। वर्तमान में यदि कोई अपने आपको
अक्लमन्द समझता है, तो उसे बेवकूफ़
बन जाना चाहिए, ताकि वह सचमुच में
अक्लमन्द बन सके। 19 परमेश्वर की निगाह
में इस दुनिया का ज्ञान बेवकूफ़ी है। जैसा कि
लिखा है, "वह बुद्धिमान को उसकी चतुराई
में फँसा देते हैं"
20 फिर से, "प्रभु बुद्धिजीवियों के तर्क को
जानते हैं, कि वे सब बेकार हैं।"
21 इसलिए कोई भी इन्सानी अगुवों पर
घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा ही
है। 22 चाहे पौलुस हो या अपुल्लोस, कैफ़ा हो
या संसार, जीवन हो या मौत, वर्तमान हो या
भविष्य-सब कुछ तुम्हारा ही तो है। 23 तुम
मसीह के हो और मसीह परमेश्वर के हैं।

4 लोगों को चाहिये कि हमें मसीह के
सेवकों की तरह और परमेश्वर के
भेदों का प्रबंधक[a] समझें। 2 एक प्रबन्धक में
विश्वास योग्यता का होना ज़रूरी है। 3 मेरे
लिए तो यह एक बहुत ही छोटी बात है कि
तुम लोग या इन्सानी अदालत मेरा मूल्यांकन
करे। यहाँ तक कि इस विषय पर मैं खुद
अपना मूल्यांकन[b] नहीं करता। 4 अपने बारे
में किसी दोष के बारे में मुझे एहसास नहीं
है। लेकिन इस आधार पर मैं निर्दोष साबित
नहीं हो जाता। मुझे परखने वाले यीशु प्रभु
हैं। 5 इसलिए समय से पहले किसी बात
पर फ़ैसला मत सुनाओ। यीशु के आने तक
इन्तज़ार करो। वह छुपी हुयी[c] बातों को
रोशनी में लाएँगे और मनों का इरादा प्रगट
करेंगे। तभी हर जन परमेश्वर से शाबाशी[d]
पाएगा।
6 तुम्हारे लाभ के लिए इन बातों को मैंने
अपने और अपुल्लोस के ऊपर लागू किया है,
कि वचन से मैंने क्या सीखा था, चाहा था
यदि तुम भी अपने जीवन में लागू करो, तो
एक अगुवे से दूसरे अगुवे की तुलना करके
घमण्ड नहीं करोगे। 7 किस वजह से तुम ऐसी
नाप-तौल करते हो? ऐसा क्या है जो तुम्हें
परमेश्वर से न मिला हो? यदि तुम्हें मिला है,
तुम्हें घमण्ड क्यों होता है, जैसे कि तुम्हें सब
कुछ भेंट स्वरूप न मिला हो?
8 तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम्हारी हर ज़रूरत
पूरी हो चुकी है। तुम सोचते हो कि तुम रईस
हो चुके हो। परमेश्वर के राज्य में तुम हमारे
बिना राज्य करने लगे हो। मेरी कामना यह
थी कि तुम राज्य करते होते। इसलिए कि तब
हम ने तुम्हारे साथ राज्य किया होता। 9 मुझे
ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों
को युद्ध में एक फ़ौज की विजय परेड की
आखिरी कतार में राजनैतिक युद्ध बंदियों की
तरह जो मारे जाने वाले हैं, स्वर्गदूतों और
लोगों को दिखाने के लिए रखा है। 10 मसीह
के लिए हम बेवकूफ़ से लगते हैं। लेकिन
तुम मसीह में अपने आपको बुद्धिमान समझते
हो। हम कमज़ोर हैं, तुम ताकतवर हो। तुम्हें
आदर मिलता है, हमें बेइज़्ज़ती। 11 इस समय
तक हम भूखे-प्यासे हैं, अच्छे कपड़े नहीं
पहिनते हैं, बुरा बर्ताव सहते हैं और सिर
के ऊपर छत तक नहीं है। 12 हम अपने ही
हाथों से मेहनत करते हैं, जब लोग हमारे
खिलाफ़ बोलते हैं, हम आशीष देते हैं। जब
हमें सताया जाता है, सहते रहते हैं। 13 जब
हमारे बारे में झूठ बोला जाता है, हम दोस्त

[a] **4.1** भण्डारी, मॅनेजर [b] **4.3** न्याय [c] **4.5** अँधेरे की [d] **4.5** प्रशंसा

की तरह जवाब देते हैं। अभी तक हमें दुनिया
की धूल-मिट्टी और कचरा समझा जाता है।
14 ये बातें मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए
नहीं कह रहा हूँ। लेकिन तुम्हें अपने बच्चे
जान कर सुधार करना चाहता हूँ। 15 मसीह
में तुम्हारे दस हज़ार गुरू हो सकते हैं,
लेकिन सभी पिता नहीं हो सकते हैं, क्योंकि
सुसमाचार के द्वारा मैं मसीह में तुम्हारा पिता
हूँ। 16 इसलिए ज़ोर डाल कर कहना चाहता
हूँ, मेरी तरह जीवन जिओ। 17 इसी कारणवश
मैंने मसीह में अपने प्रिय और विश्वासयोग्य
बेटे तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा है।
मेरी जीवन शैली के बारे में वह तुम्हें याद
दिलाएगा। जहाँ कहीं मैं जाता हूँ हर एक चर्च
में वैसा ही सिखाता हूँ।
18 कुछ लोग बहुत घमण्डी हो चुके हैं, जैसे
कि मैं तुम्हारे पास आऊँगा ही नहीं। 19 प्रभु ने
चाहा तो मैं जल्दी ही तुम्हारे पास आऊँगा।
तब मैं यह जान लूँगा कि ये लोग बनावटी
भाषण देते हैं या सचमुच में परमेश्वर की
शक्ति रखते हैं। 20 इसलिए कि परमेश्वर
का राज्य बक-बक करने में नहीं, लेकिन
परमेश्वर की सामर्थ से जीना है। 21 तुम्हें क्या
चाहिए? क्या मैं तुम्हारे पास अनुशासन की
छड़ी के साथ आऊँ या प्रेम और सज्जनता
से?

5 तुम्हारे बीच में यौन अनैतिकता के बारे
में सूचना मिली है। ऐसी गंदी हरकत
जिसे गैरमसीही भी सहन नहीं कर सकते।
वह यह कि एक आदमी अपने पिता की
पत्नी के साथ रहता है। 2 और शोकित होने
तथा उस आदमी को बाहर करने के बजाए
तुम घमण्ड कर रहे हो। 3 इसलिए हालांकि
मैं खुद वहाँ पर नहीं हूँ, मैं आत्मा में वहाँ
हूँ और मानो वहाँ मौजूद होकर फ़ैसला सुना
चुका हूँ। 4 मैं यीशु मसीह के नाम में[a] आत्मा
में वहाँ प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ के साथ
उपस्थित होऊँगा। 5 इस आदमी की देह के
नाश होने के लिए इसे शैतान के सुपुर्द कर
दो, ताकि प्रभु के दिन में उसकी आत्मा बच
सके।
6 इस सम्बन्ध में तुम्हारा घमण्ड ठीक नहीं
है। क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि थोड़ा
सा खमीर सारे आटे को खमीर कर देता
है। 7 अपने बीच में से पुराने खमीर को
निकाल डालो ताकि नया गूँधा हुआ आटा
हो जाओ-तुम तो सच में बिना खमीर के
हो। इसलिए कि मसीह हमारे फ़सह के मेम्ने
कुर्बान हो चुके हैं। 8 इसलिए हम बुराई और
अशुद्धता के पुराने खमीर के साथ त्यौहार न
मनाएँ। लेकिन बिना खमीर की उस रोटी से
जो ईमानदारी और सच्चाई की है।
9 मैंने तुम से कहा था कि व्यभिचार[b] में
लिप्त लोगों के साथ मत रहो। 10 मेरा मतलब
यौन अपराध में लिप्त अविश्वासी, लालची,
अंधेर करने वाला मूर्तिपूजक नहीं, क्योंकि
ऐसे में तो तुम्हें दुनिया से निकल जाना पड़ेगा।
11 मैं तुम्हें लिख रहा हूँ कि जो मसीही होने
का दावा करते हैं लेकिन नाजायज़ यौन
सम्बन्ध, लालच, मूर्तिपूजा, गाली-गलौच,
मतवालापन और अंधेर करने के शिकार हैं,
ऐसे लोगों के साथ मत उठो-बैठो।
12 मेरी यह ज़िम्मेदारी नहीं है कि मैं बाहर
वालों का इन्साफ़ करूँ। लेकिन यह तुम्हारी
ज़िम्मेदारी है कि चर्च में जो लोग अपराध
में बने हुए हैं, तुम उनका इन्साफ़ करो।
13 परमेश्वर तो बाहर वालों[c] का न्याय
करेंगे। लेकिन उस कुकर्मी[d] को तुम चर्च से
बाहर निकालो।

[a] **5.4** अधिकार में [b] **5.9** यौन अपराध [c] **5.13** अविश्वासियों [d] **5.13** दुष्ट व्यक्ति

6 आपस में किसी दूसरे के साथ
तुम्हारा कोई झगड़ा होने पर अपने
विश्वासी-भाईयों के पास सुलझाने के
बावजूद संसारिक अदालत में क्यों जाते
हो? 2 क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि यीशु
के लोग इस दुनिया का न्याय करेंगे?
इसलिए यदि तुम लोग इस दुनिया का न्याय
करने वाले हो, तो क्या मामूली झगड़ों को
निपटा नहीं सकते हो? 3 क्या तुम्हें नहीं पता
कि तुम स्वर्गदूतों का भी न्याय करोगे?
फिर ये हल्के-फुल्के झगड़ों[a] को क्यों नहीं
सुलझा सकते? 4 इसलिए यदि तुम्हारे यहाँ
लड़ाई-झगड़े हैं, तो तुम उनके पास क्यों जाते
हो, जो चर्च के आत्मिक लोग नहीं हैं? 5 मैं
ऐसा इसलिए कह रहा हूँ ताकि तुम शर्म
महसूस करो। क्या तुम्हारे चर्च में ऐसा कोई
बुद्धिमान इन्सान नहीं, जो तुम्हारे झगड़ों को
हल कर सके। 6 इसके विपरीत एक मसीही
दूसरे की खिलाफ़त में अविश्वासियों के
सामने अदालत में जाता है।

7 तुम्हारे बीच मुकदमें इस बात का सबूत
हैं कि तुम पहले ही से हार चुके हो। अन्याय
क्यों नहीं सह लेते? नुकसान क्यों नहीं सह
लेते? 8 लेकिन तुम खुद अन्याय[b] करते और
धोखा देते हो, वह भी अपने भाईयों बहनों
को।

9 क्या तुम्हें नहीं मालूम कि दुष्ट लोग
परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे?
धोखे में मत रहो, वेश्यावृत्ति में लगे,
मूर्तिपूजा में लगे, व्यभिचारी, पुरुषगामी और
समलिंगी, 10 चोर, लालची, पियक्कड़, गाली
देने वाले और अंधेर करने वाले परमेश्वर
के राज्य के वारिस नहीं होंगे। 11 तुम में से
कितने ऐसा ही जीवन जी रहे थे। लेकिन प्रभु
यीशु के नाम में हमारे परमेश्वर के आत्मा
से तुम धोए गए, शुद्ध किए गए और निर्दोष
ठहराए गए।

12 तुम लोग कहते हो, “सब कुछ की
इज़ाज़त है” लेकिन[c] सब कुछ फ़ायदेमंद नहीं
है। “सब कुछ की अनुमति है” -लेकिन मैं
किसी भी बात का गुलाम न बनूँगा। 13 खाना
पेट के लिए है और पेट खाने के लिए, लेकिन
परमेश्वर दोनों ही को बर्बाद करेंगे। यह देह
यौन अनैतिकता के लिए नहीं, लेकिन प्रभु के
लिए और प्रभु देह के लिए हैं। 14 परमेश्वर ने
जिस तरह से यीशु मसीह को मरे हुओं में से
जिलाया, वह हमें भी अपनी सामर्थ से जिला
उठाएँगे। 15 क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि
तुम्हारी देह मसीह के अंग हैं? क्या मैं मसीह
के अंगों को लेकर वेश्या के अंग बनाऊँ?
16 क्या तुम्हें नहीं मालूम जो वेश्या से सम्बन्ध
करता है, उसके साथ जुड़ जाता है? इसलिए
कि ऐसा कहा गया है, “दो जन एक देह हो
जाएँगे।” 17 लेकिन जो व्यक्ति प्रभु से जुड़
जाता है, वह उनके साथ एक आत्मा हो जाता
है। 18 व्यभिचार[d] से भागो। कोई गुनाह देह
पर इतना असर नहीं डालता है जितना यौन
अनैतिकता। यह गुनाह अपनी देह के विरोध
में है।

19 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह
पवित्र आत्मा का मंदिर है? वह तुम में है,
तुम्हें परमेश्वर से मिला है और तुम अपने
नहीं हो। 20 तुम बड़ी कीमत देकर खरीदे गए
थे। इसलिए तुम्हें अपनी देह से परमेश्वर को
आदर देना चाहिए।

7 अब उन बातों के बारे में जो तुमने मुझे
लिखी थीं हर व्यक्ति के लिए भला
यह है कि वह यौन अपराध[e] से बचा रहे।
2 लेकिन व्यभिचार के अपराध से बचने के

[a] 6.3 संसारिक मुद्दों [b] 6.8 गलत [c] 6.12 मैं कहता हूँ [d] 6.18 यौन गुनाह [e] 7.1 अनुचित यौन सम्बन्ध

लिए, हर एक पुरुष की अपनी पत्नी और हर
एक महिला का अपना पति होना चाहिए।
3 पति अपनी पत्नी के अधिकार का और
पत्नी अपने पति के अधिकार की इज़्ज़त
करे। 4 पत्नी को अपनी देह पर अधिकार
नहीं है लेकिन उसके पति को है। वैसे ही
पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं,
लेकिन उसकी पत्नी को है। 5 एक दूसरे को
इस अधिकार से वंचित मत रखो। सिर्फ़
सीमित समय तक आपसी सहमति से ही
यौन सम्बन्ध में विराम आए, ताकि प्रार्थना
के लिए वक्त मिले। फिर यौन सम्बन्ध रखो
ताकि तुम्हारे आत्मसंयम में कमी की वजह
से शैतान तुम्हारी परीक्षा न कर सके। 6 मैं
यह सलाह या अनुमति[a] अपने एक मत के
रूप में दे रहा हूँ न कि ऐसा करना ही है। 7 मैं
यही चाहूँगा कि लोग मेरी तरह हों। लेकिन
लोगों को परमेश्वर से अलग-अलग तरह के
वरदान मिले हैं।

8 अविवाहितों और विधवाओं से तो मैं यही
कहूँगा कि वे मेरे समान रहें। 9 लेकिन यदि वे
आत्मसंयमी नहीं हो सकते, तो शादी कर लें।
इसलिए कि अपूर्ण यौन इच्छा से परेशान होने
के बजाए शादी कर लेना बेहतर है।

10 शादी-शुदा लोगों को मैं नहीं, बल्कि
प्रभु आज्ञा देते हैं, और वह यह है-एक
पत्नी को अपने पति को तलाक नहीं देना
चाहिए। 11 लेकिन यदि वह ऐसा करती है,
उसे अविवाहित ही रहना चाहिए या फिर से
अपने पति से मेल कर लेना चाहिए। पति को
भी पत्नी को तलाक नहीं देना चाहिए।

12 शेष लोगों से मैं कह रहा हूँ प्रभु नहीं यदि
किसी की पत्नी अविश्वासी है लेकिन अपने
पति के साथ रहने के लिए राज़ी है, तो उसे
अपनी पत्नी को तलाक नहीं देना चाहिए।
13 यदि किसी महिला का अविश्वासी पति
उसके साथ रहने के लिए तैयार हो, तो
वह पति को न छोड़े। 14 अविश्वासी पति
अपनी पत्नी की वजह से पवित्र ठहरता है।
अविश्वासी पत्नी अपने पति की वजह से
पवित्र ठहरती है। नहीं तो तुम्हारे बच्चे अशुद्ध
ठहरते, लेकिन अभी वे शुद्ध हैं।

15 लेकिन यदि अविश्वासी तलाक की
माँग करे, तो ठीक है, दे दो। इस परिस्थिति में
विश्वासी, जीवन साथी किसी तरह से फिर
बँधा हुआ न रहेगा। परन्तु परमेश्वर चाहते हैं
कि हम मेल कर लें। 16 पत्नी तुम्हें क्या पता
कि तुम अपने पति का उद्धार करा लोगी?
या पति, कि तुम अपनी पत्नी को उद्धार के
अनुभव तक ला सकते हो?

17 तुम में से प्रत्येक जन को प्रभु ने जिस
स्थिति में रखा है, उसी बुलाहट में बना
रहे। सभी चर्च[b] के लिए यही मेरा निर्देश
है। 18 उदाहरण के लिए विश्वासी बनने से
पहले जिस व्यक्ति का खतना हुआ हो, वह
उसमें बदलाव लाने का यत्न न करे। जिस
ने कभी खतना न कराया हो और वह यीशु
को ग्रहण कर लेता है, उसे खतना करवाने
की ज़रूरत नहीं। 19 खतना करवाने या न
करवाने से कुछ नहीं होता है। परमेश्वर की
आज्ञा मानना ही सब कुछ है। 20 हर एक
व्यक्ति को उसी हालत में रहना चाहिए
जिस में उसे बुलाया गया है। 21 क्या यीशु
को अपनाए जाने के समय तुम गुलाम थे?
परेशान मत हो। लेकिन अगर तुम गुलामी
से आज़ाद हो सकते हो, तो अवसर का
लाभ उठाओ। 22 इसलिए कि जो गुलामी की
अवस्था में प्रभु में आया, वह प्रभु का आज़ाद
किया हुआ है। इसी तरह से जो किसी की
गुलामी में न रहा हो, उद्धार पाने से मसीह का

[a] **7.6** कुछ समय के लिए सम्बन्ध न रखना [b] **7.17** कलीसियाओं

गुलाम बन चुका है। 23 तुम को दाम देकर
खरीदा गया है, इसलिए इन्सानों के गुलाम
मत बनो। 24 भाईयो बहनो, तुम्हारे विश्वासी
बनने के समय तुम जिस स्थिति में थे, उसी
में परमेश्वर के साथ रहो

25 कुँवारियों के सम्बन्ध में, मुझे प्रभु की
ओर से कोई आदेश नहीं मिला है। लेकिन
प्रभु की दया से मेरा जो मत है, उस पर भरोसा
किया जा सकता है। 26 मेरा सोचना यह है
कि वर्तमान के कठिन समयों को देखते हुए
जो व्यक्ति जैसी हालत में है, उसी में रहे।
27 जिस के पास पत्नी है, तलाक की न सोचे।
यदि पत्नी नहीं है, तो पत्नी की खोज में न
लगे। 28 यदि तुम शादी कर लेते हो, तो तुम
से चूक नहीं हुयी है। यदि कुँवारी शादी कर
लेती है तो इसे भी चूक जाना नहीं कहेंगे।
लेकिन जो लोग विवाह करेंगे, वे इस संसार
में शारीरिक दुखों का सामना करेंगे। मैं तुम्हें
सब परेशानियों से बचाना चाहता हूँ।

29 भाईयो बहनो, मैं यह कहता हूँ, समय
कम है। इसलिए जिन के पास पत्नियाँ हैं,
वे यह मान कर चलें कि उनके पास पत्नी है
ही नहीं 30 जो लोग रोते हैं, खुशी मनाते हैं, या
चीज़ें खरीदते हैं, उन्हें अपने रोने, खुशी मनाने
वस्तुएँ खरीदने में ही खो नहीं जाना चाहिए।
31 इस संसार का उपभोग करने वाले ऐसे हों,
कि उन सब बातों में डूब न जाएँ, क्योंकि इस
जगत के तौर-तरीके बदलते रहते हैं।

32 मैं चाहता हूँ कि तुम चिन्ता-मुक्त जीवन
जियो। एक अविवाहित व्यक्ति प्रभु की
बातों के बारे में चिन्तित रहता है कि प्रभु
को किस तरह प्रसन्न रखे। 33 लेकिन शादी
शुदा आदमी इस दुनिया की बातों में उलझा
रहता है, कि अपनी पत्नी को किस तरह
सन्तुष्ट रखे। 34 उसका ध्यान बँटा रहता है।
अविवाहित महिला या कुँवारी प्रभु की बातों
के बारे में सोचती रहती है कि वह पूरी तरह
से प्रभु के प्रति देह और आत्मा में पवित्र[a]
रहे। लेकिन एक विवाहित महिला को पत्नी
की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने और पति
को सन्तुष्ट करने का ख्याल रहता है। 35 यह
मैं तुम्हारे लाभ के लिए कह रहा हूँ न कि
इसलिए कि तुम पर रोक लगाऊँ। मैं इसलिए
कह रहा हूँ ताकि जैसा शोभा देता है, किया
जाए और बिना किसी रुकावट के तुम प्रभु
की बातों[b] में लगे रहो।

36 यदि किसी पुरुष को यह लगता है कि
वह अपनी कुँवारी की शादी के बारे में गंभीर
नहीं है और उसकी[c] जवानी ढलती जा रही
है, तो उसकी शादी होने दे, इस में कुछ बुरा
नहीं है। 37 लेकिन जिस ने अपना मन बना
लिया है और उसको ज़रूरत नहीं है, लेकिन
अपनी इच्छा को वश में कर सकता है, और
कुँवारी को ब्याहता नहीं, वह भी ठीक करता
है। 38 इसलिए जो कुँवारी का विवाह होने
देता है, वह अच्छा करता है, लेकिन जो नहीं
कराता[d] है वह और भी अच्छा करता है।

39 जब तक पति जीवित है, पत्नी उससे
जुड़ी हुयी है। लेकिन यदि उसका पति मर
जाए तो वह किसी भी विश्वासी से विवाह
कर सकती है। 40 मेरे अपने विचार से वह
खुश रहेगी, यदि वह जैसी है, वैसी रहे-मैं
सोचता हूँ कि जो सलाह मैं दे रहा हूँ वह
परमेश्वर के आत्मा की ओर से है।

8 मूर्तियों के सामने चढ़ायी वस्तुओं के
बारे में: हम जानते है कि इस विषय पर
हम सभी को सच्चाई का ज्ञान है। इस तरह
का ज्ञान हमारे भीतर अहंकार उत्पन्न करता
है, लेकिन प्रेम से सम्बन्धों में बढ़त[e] होती

[a] **7.34** समर्पित [b] **7.35** सेवा [c] **7.36** कुँवारी की [d] **7.38** कर देता [e] **8.1** आत्मिक उन्नति

है। 2 यदि कोई यह समझता है कि उसके
पास हर एक उत्तर है, तो जैसा उसको जानना
चाहिए वह अब तक नहीं जानता। 3 लेकिन
जो इन्सान परमेश्वर से प्रेम करता है, उसे
परमेश्वर जानते हैं।

4 इसलिए जहाँ चढ़ायी हुयी चीज़ों को खाने
का सवाल है, हम जानते हैं, कि "मूर्ति अपने
आप में कुछ नहीं है" और एक परमेश्वर
को छोड़ कोई नहीं।" 5 यद्यपि आकाश और
पृथ्वी पर कहलाए जाने वाले कुछ ईश्वर
और प्रभु हैं[a] 6 फिर भी हमारे लिए एक ही
परमेश्वर पिता हैं, जिन से सब कुछ है और
जिन के लिए हम जीवित हैं। एक ही प्रभु यीशु
मसीह हैं जिन के द्वारा परमेश्वर ने सब कुछ
बनाया और हमें जीवन दिया।

7 किन्तु हर व्यक्ति यह बात नहीं जानता।
कुछ लोग जो अब तक मूर्तियों को कुछ
समझते हैं, वे चढ़ायी हुयी चीज़ों के उपभोग
को सचमुच के ईश्वरों की उपासना समझते
हैं। इस प्रकार उनके कोमल विवेक को दुख
पहुँचता है। 8 सच यह है कि हम जो खाते हैं,
उससे परमेश्वर की तरफ़ से शाबाशी नहीं
पाते हैं। उसे खाने से हमारा कुछ नुकसान
नहीं होगा और यदि खाएँगे तो कुछ फ़ायदा
नहीं होगा।

9 लेकिन कहीं ऐसा न हो कि कोमल विवेक
रखने वाले व्यक्ति को तुम्हारी आज़ादी से
चोट पहुँचे। 10 इसलिए ऐसा व्यक्ति जिसे
सच्चाई मालूम है[b] क्या तुम्हें मूर्ति के मन्दिर में
खाते देख चढ़ावे में से खाने के लिए प्रेरित
नहीं होगा? 11 इसलिए तुम्हें सही ज्ञान होने
के कारण तुम्हारा वह भाई-बहन जिस के
लिए मसीह ने मौत सही, बर्बाद हो सकता
है[c]। 12 यदि इस तरह तुम अपने भाई या
बहन के विरोध में अपराध करके उसके
कोमल विवेक को ठेस पहुँचाते हो, तो
मसीह के विरोध में अपराध करते हो। 13 इस
कारणवश, यदि भोजन[d] खाने से मेरे भाई या
बहन के कोमल विवेक को ठेस पहुँचती है
तो, मैं चढ़ायी हुयी वस्तु[e] कभी नहीं खाऊँगा,
ताकि वह व्यक्ति मूर्तिपूजा में न फँस जाए।

9 क्या मैं आज़ाद नहीं हूँ? क्या मैं प्रेरित
नहीं हूँ? क्या मैंने प्रभु यीशु को नहीं
देखा? क्या तुम मेरे कारण प्रभु के नहीं हो?
2 यदि मैं दूसरों के लिए प्रेरित नहीं हूँ, तो कम
से कम तुम्हारे लिए हूँ। तुम ही इस बात के
सबूत हो कि मैं प्रभु का प्रेरित हूँ।

3 जो लोग मेरे अधिकार के बारे में सवाल
करते हैं, उनको मेरा यही उत्तर है। 4 क्या हमें
आर्थिक सहयोग लेने का अधिकार नहीं है?
5 क्या हमें इस बात का अधिकार नहीं कि
एक विश्वासिनी से विवाह करें, जिस तरह से
दूसरे प्रेरित, प्रभु के भाई और पतरस[f] ने किया
है। 6 क्या सिर्फ़ बरनबास और मुझे अधिकार
नहीं कि कमाई न करें?

7 ऐसा कौन सा सैनिक है, जो बिना
मजदूरी[g] सेना में काम करता हो? ऐसा कौन
है जो अंगूर की बारी तो लगाता है लेकिन
उसके अंगूर नहीं खाता है? ऐसा कौन है
जो भेड़ों की देख रेख तो करता है, लेकिन
उनके दूध का इस्तेमाल नहीं करता है?
8 क्या ये सब बातें मेरे दिमाग की उपज
हैं, या नियमशास्त्र भी यही नहीं सिखाता?
9 इसलिए कि मूसा की किताब में लिखा है,
"जो बैल चक्की चलाता है उसको दाना खाने
से मत रोकना।" क्या परमेश्वर को केवल
बैलों की ही चिन्ता है? 10 या क्या वह हमारी

[a] **8.5** और ऐसा है भी [b] **8.10** कि मूरत कुछ नहीं [c] **8.11** मूर्तिपूजा में वापस जाना [d] **8.13** माँस या चढ़ायी हुयी वस्तु [e] **8.13** माँस या कुछ और [f] **9.5** कैफ़ा [g] **9.7** तनख़्वाह

ज़रूरतों को पूरा किए जाने के लिए भी नहीं
कह रहे हैं? हाँ, यह हमारे लिए भी लिखा गया
था, ताकि जो हल चलाता है और जो बालों[a]
को कुचलता है दोनों फ़सल का लाभ उठा
सकें। 11 यदि हम ने तुम्हारे बीच आत्मिक
आशीषों को बोया, तो क्या तुम्हारी भौतिक
आशीषों के हम भागीदार नहीं हो सकते?
12 यदि दूसरों को तुम से आर्थिक सहयोग
लेने का अधिकार है, तो क्या हमें उन से
अधिक अधिकार नहीं है? लेकिन हम ने इस
अधिकार का इस्तेमाल नहीं किया। बल्कि
हम सब कुछ सहते हैं, ताकि हम मसीह के
सुसमाचार में रुकावट न बनें।
13 क्या तुम्हें पता नहीं कि जो लोग मन्दिर
में सेवा करते हैं, मन्दिर की रोटी खाते हैं
और जो वेदी की सेवा करते हैं वे चढ़ायी
हुयी वस्तुओं के हिस्सेदार बनते हैं? 14 इसी
तरह प्रभु ने यह आज्ञा दी है कि जो लोग
सुसमाचार[b] सुनाते हैं, उनके खर्चे सुनने वालों
से ही पूरे किए जाएँ।
15 लेकिन मैंने इन में से किसी भी अधिकार
का उपयोग नहीं किया। मैं इसलिए लिख
भी नहीं रहा हूँ कि मेरे लिए कुछ किया
जाए। सच पूछो तो बजाए इसके कि मेरे
बिना मज़दूरी लिए संदेश देने के घमण्ड से
कोई मुझे वंचित करे, मेरा मर जाना भला है।
16 इसलिए कि यदि मैं सुसमाचार[c] सुनाऊँ,
मेरे पास गर्व करने का कोई कारण नहीं,
क्योंकि मैं विवश होता हूँ। यदि मैं खुशी का
संदेश न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय! 17 यदि
मैं खुद की इच्छा से ऐसा करता हूँ तो मुझे
इसका प्रतिफल मिलेगा। लेकिन मेरे पास
कोई दूसरा रास्ता या चुनाव नहीं, इसलिए
कि परमेश्वर ने मुझे यह ज़िम्मेदारी सौंपी है।
18 तो फिर मुझे इसके बदले में मिलेगा क्या?
यह तो वह अवसर है, जो मुझे दूसरों से बिना
पैसा लिए खुशी का संदेश सुनाना है।
19 हालांकि मैं आज़ाद हूँ और किसी के
अधीन नहीं हूँ, फिर भी तमाम लोगों को
मसीह के पास लाने के लिए, मैं सभी का
गुलाम बन चुका हूँ। 20 यहूदियों को मसीह
में लाने के लिए जब मैं उनके साथ था,
उनके नियमशास्त्र का पालन करने के समान
बना, हालांकि मैं उस नियमशास्त्र के अधीन
नहीं था। 21 जब मैं गैरयहूदियों के साथ हूँ
जो कि यहूदियों के नियमशास्त्र के अनुसार
नहीं चलते, मैं भी नियमशास्त्र के अधीन नहीं
हूँ, ताकि उन्हें मसीह तक ला सकूँ। लेकिन
परमेश्वर के नियमशास्त्र को नज़रअन्दाज़
नहीं करता, मैं मसीह के नियम[d] का पालन
करता हूँ। 22 जो कोमल विवेक के हैं, उनके
लिए मैं कोमल विवेक वाला बना ताकि उन्हें
जीत सकूँ। सभी लोगों के लिए मैं सब कुछ
बन गया, ताकि तमाम लोगों को उद्धार के
अनुभव में ला सकूँ। 23 यह सब कुछ मैं
सुसमाचार के लिए करता हूँ, ताकि दूसरे
लोगों के साथ इस में हिस्सेदार बन सकूँ।
24 क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि दौड़ में
सभी दौड़ने वाले दौड़ते हैं, लेकिन केवल
एक ही ईनाम जीत पाता है? इसलिए जीत
का लक्ष्य रखो। 25 हर एक पहलवान सब
बातों में अपने आप को काबू में रखता है।
एक नष्ट हो जाने वाले मुकुट के लिए वह
ऐसा करता है, लेकिन हम नष्ट न होने वाले
मुकुट के लिए। 26 इसलिए मैं न बिना किसी
लक्ष्य के दौड़ता हूँ न हवा में मुक्केबाज़ी करता
हूँ। 27 बजाए इसके मैं अपनी देह या पुराने
स्वभाव[e] को ज़बरदस्ती से अपने वश में

[a] **9.10** दानों [b] **9.14** खुशी की खबर [c] **9.16** खुशी की खबर [d] **9.21** दूसरों की भलाई वाली जीवन शैली
[e] **9.27** की जायज़ और नाजायज़ इच्छाओं और कामों को

रखता हूँ, ताकि दूसरों को संदेश देकर मैं
स्वयं अयोग्य न ठहरूँ।

10 भाईयो-बहनो, मैं नहीं चाहता कि
तुम इस बात से अनजान रहो, कि
हमारे पूर्वज बादल के नीचे थे और समुद्र पार
कर गए। 2 उन सभी को बादल और समुद्र में
मूसा का बपतिस्मा दिया गया। 3 सभी ने एक
ही आत्मिक खाना खाया। 4 सभी ने एक ही
आत्मिक पानी पीया। इसलिए कि वे अपने
साथ-साथ चलने वाली आत्मिक चट्टान जो
मसीह थे, उन से पीते थे। 5 लेकिन परमेश्वर
उन में से अधिकतर लोगों से खुश नहीं थे,
इसलिए वे जंगल में ही ढेर हो गए।

6 ये घटना हमारे लिए एक उदाहरण ठहरी,
ताकि उनके समान हम बुरी वस्तुओं को
न चाहें। 7 इसलिए उन में से कुछ की
तरह मूर्तिपूजक न बनो। जैसा कि लिखा
है, "खाने-पीने के लिए लोग बैठे और
खेलने-कूदने के लिए उठे" 8 उन में से अनेक
लोगों की तरह हम व्यभिचार[a] न करें। इसी
वजह से एक ही दिन में तेईस हज़ार लोग मर
गए थे।

9 हम प्रभु को न परखें, क्योंकि ऐसा करने
के कारण कुछ साँपों से बर्बाद किए गए।
10 जैसे उन में से कुछ कुड़कुड़ाए और
नाश करने वाले ने उन्हें मार डाला, तुम
कुड़कुड़ाना नहीं।

11 उनके साथ घटने वाली ये वारदातें,
हमारे लिए मसीहत बन गयीं। हम जो इस युग
के अन्त में रहते हैं, ये बातें हमारे सीखने के
लिए लिखी गयीं थीं। 12 इसलिए जो सोचता
है कि वह डगमगा नहीं सकता, सतर्क रहे
कि कहीं गिर न जाए।

13 ऐसे किसी प्रलोभन[b] का सामना तुमने
नहीं किया, जिस का सामना दूसरे लोग करते
हैं परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं, वह सहने से
बाहर तुम्हें किसी प्रलोभन में फँसने नहीं देंगे।
लेकिन प्रलोभन से बच निकलने का रास्ता
भी दिखाएँगे, ताकि तुम सह सको।

14 इसलिए मेरे दोस्तो मूर्तिपूजा से भागो।
15 तुम लोग तो समझदार हो, जो मैं कह रहा
हूँ, स्वयं उसे परखो[c] 16 क्या जिस धन्यवाद
के कटोरे में हम भाग लेते हैं[d] वह मसीह के
खून में सहभागिता[e] नहीं है? क्या जिस रोटी
को हम तोड़ते हैं, वह मसीह की देह में हिस्सा
लेना नहीं है। 17 इसलिए कि रोटी एक है, हम
जो बहुत हैं, एक देह हैं क्योंकि हम सभी एक
रोटी ही में से खाते हैं।

18 इस्राएली लोगों पर नज़र डालो। क्या
वेदी के बलिदानों को खाने वाले एक वेदी
के साथ सहभागी नहीं होते है? 19 क्या मैं
यह कहना चाह रहा हूँ कि मूर्तियाँ या उन पर
चढ़ायी हुयी वस्तुएँ कुछ मायने रखती हैं?
20 नहीं, मेरे कहने का मतलब यह है कि गैर
यहूदी जो चढ़ावा चढ़ाते हैं, वह दुष्टात्माओं
के लिए होता है, परमेश्वर के लिए नहीं।
इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं
के साथ किसी तरह से साझा करो। 21 तुम
दुष्टात्माओं के प्याले और प्रभु के प्याले में
हिस्सेदार[f] नहीं हो सकते। तुम प्रभु की मेज़
और दुष्टात्माओं की मेज़ में भागीदार नहीं हो
सकते। 22 क्या हम प्रभु की ईर्ष्या[g] को उकसा
रहे हैं? क्या हम प्रभु से अधिक शक्तिशाली
हैं?

23 "सब कुछ की अनुमति है" -लेकिन सब
कुछ लाभदायक नहीं है। "सब बातों की
अनुमति है" -लेकिन सब बातों से उन्नति नहीं

[a] **10.8** अनैतिक काम [b] **10.13** परीक्षा [c] **10.15** या उसके बारे में निर्णय लो [d] **10.16** धन्यवाद देते हैं
[e] **10.16** हिस्सेदारी [f] **10.21** सहभागी [g] **10.22** क्रोध

होती है। 24 अपनी ही भलाई की मत सोचो
लेकिन दूसरों की भलाई की भी सोचो।
25 बिना प्रश्न किए हुए बाज़ार में मिलने
वाले मांस को निःसंकोच खाओ। 26 इसलिए
कि पृथ्वी और इस में पायी जाने वाली हर
वस्तु प्रभु की है।
27 यदि तुम्हें कोई गैर-मसीही खाने पर
बुलाए और तुम जाना चाहो तो जो परोसा
जाता है बिना विवेक की उलझन के खा
लो। 28 लेकिन यदि कोई तुम से कहता है,
“यह प्रसाद है”, तो उस बताने वाले व्यक्ति
और उसके विवेक के कारण मत खाओ।
29 तुम्हारा नहीं लेकिन दूसरे व्यक्ति का
विवेक इसलिए कि दूसरे के विवेक से मेरी
स्वतंत्रता को क्यों नापा जाए? 30 यदि मैं
खायी जाने वाली वस्तु के लिए धन्यवाद
देता हूँ, तो फिर मैं उसके लिए दोषी क्यों
ठहराया जाता हूँ।
31 इसलिए जो तुम खाओ, पियो या करो
सब कुछ परमेश्वर के सम्मान[a] को बढ़ाने
के लिए करो।
32 तुम यहूदियों, यूनानियों, परमेश्वर के
चर्च या किसी भी व्यक्ति के जीवन के लिए
रुकावट या रोड़ा न बनो कि वह मसीह के
पास न आए या मसीह में उन्नति न कर पाए।
33 इसलिए कि मैं ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की
मुक्ति का कारण बन सकूँ, मैं सब बातों में
सब को खुश करना चाहता हूँ और मुझे अपने
लाभ की चिन्ता नहीं है।

11 जिस तरह से यीशु मसीह मेरे लिए
एक उदाहरण हैं, मेरा जीवन तुम्हारे
लिए एक उदाहरण बने। 2 इसलिए कि सब
बातों में तुम मुझे याद करते हो और शिक्षाओं
का पालन ठीक उसी तरह करते हो जैसा मैंने
तुम्हें सौंपा था, मैं तुम्हारी तारीफ़[b] करता हूँ।
3 मैं चाहता हूँ कि तुम लोग यह समझ
लो, कि प्रत्येक पुरुष[c] का सिर मसीह है
और स्त्री[d] का सिर पुरुष[e] है और मसीह का
सिर परमेश्वर हैं। 4 जो पुरुष सिर ढाँक कर
प्रार्थना करता या नबूवत करता है, वह अपने
सिर[f] की बेइज़्ज़ती[g] करता है। 5 जो स्त्री बिना
सिर ढाँके हुए प्रार्थना या नबूवत करती है वह
अपनी सिर[h] की बेइज़्ज़ती करती है क्योंकि
वह ऐसी स्त्री की तरह है जिस ने सिर मुढ़वा
लिया है। 6 यदि स्त्री अपना सिर न ढाँके,
तो वह अपने बाल भी कटवा ले। लेकिन
यदि स्त्री के लिए बाल कटवाना शर्म की
बात हो, तो वह अपना सिर ढाँके। 7 पुरुष
के लिए अपना सिर ढाँकना उचित नहीं है,
क्योंकि वह परमेश्वर की समानता में बनाया
गया था और परमेश्वर की महिमा है, लेकिन
स्त्री पुरुष की महिमा है। 8 क्योंकि पुरुष का
निर्माण स्त्री से नहीं हुआ लेकिन स्त्री को
पुरुष से बनाया गया था। 9 न ही स्त्री के लिए
पुरुष को बनाया गया, लेकिन पुरुष के लिए
स्त्री को बनाया गया था 10 इसी कारणवश
एक महिला के सिर पर अधिकार का चिन्ह
होना चाहिए।
11 किसी भी हालत में प्रभु में न तो स्त्री
बिना पुरुष के, और न पुरुष बिना स्त्री के है।
12 क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष
स्त्री के द्वारा है, परन्तु सब कुछ परमेश्वर
से है। 13 तुम ही सोचो[i] क्या स्त्री को बिना
सिर ढाँके परमेश्वर से प्रार्थना करना सोहता
है? 14 क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम्हें नहीं
पता कि यदि पुरुष लंबे बाल रखे तो उसके
लिए शर्म की बात है? 15 लेकिन यदि स्त्री

[a] **10.31** प्रशंसा, इज़्ज़त [b] **11.2** बड़ाई [c] **11.3** पति [d] **11.3** पत्नी [e] **11.3** पति [f] **11.4** मसीह
[g] **11.4** अनादर [h] **11.5** पति [i] **11.13** फ़ैसला करो

लंबे बाल रखती है तो यह उसे शोभा देते हैं, क्योंकि उसको बाल ओढ़ने के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन यदि कोई तर्क करना चाहे तो यह जाने कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं[a] की ऐसी रीति है।

17 लेकिन यह आज्ञा देते हुए मैं तुम्हारी बड़ाई नहीं करता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से लाभ नहीं लेकिन नुकसान होता है। 18 क्योंकि पहले तो मैं यह सुनता हूँ कि जब तुम चर्च में इकट्ठा होते हो तो तुम में फूट होती है। मैं इस बात को थोड़ा-थोड़ा सच भी मानता हूँ। 19 तुम में गुटबाज़ी ज़रूर होगी, ताकि जो लोग तुम में खरे हैं, वे प्रगट हो जाएँ।

20 इसलिए तुम जो इकट्ठा होते हो, तो यह इसलिए नहीं कि प्रभु भोज में हिस्सा लेने में तुम्हारी दिलचस्पी है। 21 इसलिए कि खाने का समय आने से पहले ही बिना दूसरों के साथ अपना खाना बाँटे कुछ लोग खा लेते हैं। इसलिए कुछ लोग भूखे रह जाते हैं और कुछ मतवाले हो जाते हैं। 22 क्या खाने-पीने के लिए तुम्हारे पास घर नहीं हैं? या तुम लोग परमेश्वर के चर्च को तुच्छ जानते और गरीबों को शर्मिन्दा करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या मैं तुम्हारी बड़ाई करूँ? नहीं, इस बात के लिए मैं तुम्हारी बड़ाई नहीं करूँगा।

23 जो मुझे प्रभु से मिला, वही मैंने तुम्हें पहुँचा दिया है। वह यह कि जिस रात यीशु मसीह को पकड़वाया गया उन्होंने रोटी ली 24 और धन्यवाद देने के बाद तोड़ते हुए कहा, “यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है मुझे याद करने के लिए ऐसा करते रहना।” 25 इसी तरह खाना खाने के बाद यीशु ने यह कहते हुए कटोरा भी लिया, “यह मेरे खून में नयी वाचा का कटोरा है। जब कभी तुम इस में से पीओ, तब तब मेरी याद के लिए यह करना।” 26 जब कभी तुम इस रोटी में से खाते और इस प्याले में से पीते हो प्रभु के फिर से आने तक उनकी मौत का ऐलान करते हो।

27 इस कारणवश, जो कोई अयोग्य तरीके से रोटी खाए और प्रभु के प्याले में से पिये, वह यीशु की देह और खून के खिलाफ़ गुनाह करता है। 28 एक व्यक्ति को अपना परीक्षण करना चाहिए और फिर रोटी में से खाना और प्याले में से पीना चाहिए। 29 इसलिए कि जो देह को बिना आदर दिए खाता और प्याले में से पीता है, वह अपने ऊपर दण्ड लाता है। 30 इसी कारण से तुम में से बहुत से कमज़ोर और बीमार हैं और कुछ एक मर भी गए। 31 यदि हम ने खुद की जाँच की होती, तो हम पर अनुशासनात्मक कारवाई न होती[b]। 32 लेकिन जब प्रभु हमें दण्ड देते हैं तो यह अनुशासनात्मक कार्यवाई इसलिए होती है ताकि इस दुनिया के साथ हम दोषी न ठहराए जाएँ।

33 इसलिए मेरे भाईयो-बहनो, जब तुम लोग खाने के लिए इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे का इन्तज़ार किया करो। 34 यदि किसी को भूख लगती हो तो, वह घर पर ही खा लिया करे-ताकि जब तुम इकट्ठे होते हो, तब सज़ा की नौबत न आए। दूसरी बातों के बारे में सलाह-मशविरा मैं आने के बाद ही दूँगा।

12 भाईयो-बहनो, मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम आत्मिक वरदानों के सम्बन्ध में अज्ञानता में रहो। 2 तुम्हें याद है कि तुम जब मसीह के विश्वासी नहीं थे, गूँगी मूरतों द्वारा अक्सर बहकाए जाते थे। 3 मैं चाहता हूँ कि तुम यह समझो कि परमेश्वर के आत्मा

[a] **11.16** चर्च [b] **11.31** दण्ड न आता

की अगुवाई में कोई नहीं कह सकता, “यीशु श्रापित हैं”, इसी तरह बिना पवित्र आत्मा के कोई नहीं कह सकता, “यीशु प्रभु है”

4 अलग-अलग वरदान हैं, लेकिन आत्मा
एक ही है। 5 अलग-अलग सेवाएँ भी हैं,
लेकिन प्रभु एक ही हैं। 6 परमेश्वर तमाम
तरीकों से काम[a] करते हैं, लेकिन परमेश्वर
एक ही हैं जो हम सब में काम करते हैं।
7 एक दूसरे की सहायता[b] के लिए हम में
से हर एक को पवित्रात्मा का यह वरदान
दिया जाता है। 8 पवित्र आत्मा के द्वारा किसी
को बुद्धि का वचन और किसी को ज्ञान का
वचन मिलता है। 9 किसी को उसी आत्मा से
विश्वास तथा किसी और को उसी आत्मा
से स्वस्थ कर देने का वरदान दिया जाता
है। 10 किसी को आश्चर्य के कामों को करने
की शक्ति, किसी को भविष्यद्वाणी करने की,
किसी को आत्माओं की परख, किसी को
तरह-तरह की भाषाएँ बोलने और किसी को
उन भाषाओं का मतलब बताना। 11 यह वही
पवित्र आत्मा है जो सभी वरदानों को बाँट
देता है। वही निर्धारित करता है कि किस
को कौन सा वरदान दे।

12 जिस तरह से देह एक है और तमाम अंग
हैं और सभी अंगों से मिल कर एक देह बनती
है। इसी तरह मसीह हैं या मसीह की देह
है। 13 इसलिए कि एक देह में हम सब को,
एक ही आत्मा में बपतिस्मा दिया गया। चाहे
यहूदी, या यूनानी या गुलाम या स्वतन्त्र हम
सभी को एक ही आत्मा दिया गया है।

14 सच तो यह है कि देह मात्र एक अंग
नहीं है लेकिन अनेकों अंगों से मिल कर बनी
है। 15 यदि पैर कहे, “इसलिए कि मैं हाथ
नहीं, मैं देह का हिस्सा नहीं” ऐसा कहने से
पैर देह की हिस्सेदारी खो नहीं देता। 16 यदि
कान कहे, “इसलिए कि मैं आँख नहीं, मैं
देह का हिस्सा नहीं हूँ”, ऐसा कहने पर भी
कान देह में अपनी भूमिका को खो नहीं देता।
17 यदि पूरी देह आँख होती, तो सुनने का
काम कौन करता? यदि पूरी देह कान होती,
तब सूँघने का काम किस ने किया होता?
18 लेकिन सच्चाई यह है, कि जैसा परमेश्वर
ने चाहा, उन्होंने देह में हर एक अंग को रखा
है। 19 यदि पूरी देह एक ही अंग होती तो क्या
वह देह कहलाती भी? 20 इसलिए ढेर सारे
अंग हैं, लेकिन एक ही देह है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे
तुम्हारी ज़रूरत नहीं है”, न ही सिर, पैर
से कह सकता है, “मुझे तुम्हारी ज़रूरत
नहीं है।” 22 इसके विपरीत जो देह के अंग
कमज़ोर और कम महत्व के दिखते हैं, वे ही
बहुत ज़रूरी होते हैं। 23 और देह[c] के जिन
अंगों को हम कम आदर के लायक समझते
हैं, उन्हीं को अधिक आदर देते हैं और हमारे
शोभाहीन अंग बहुत अधिक शोभनीय हो
जाते हैं। 24 फिर भी हमारे शोभनीय अंगों को
उसकी ज़रूरत नहीं, लेकिन परमेश्वर ने देह
को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को कम
आदर मिला था, उसी को बहुत आदर मिले।
25 ताकि देह में फूट न हो, लेकिन सभी अंग
एक दूसरे की चिन्ता करें। 26 इसलिए यदि
एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग दुख
पाते हैं। यदि एक अंग की बड़ाई होती है,
तो उसके साथ सभी अंग खुश होते हैं।

27 इसी तरह तुम सभी मिल कर मसीह
की देह हो और अलग-अलग अंग हो।
28 परमेश्वर ने चर्च में अलग-अलग लोगों
को नियुक्त किया हैः पहले प्रेरित, दूसरे
नबी, तीसरे शिक्षक फिर सामर्थ के काम
करने वाले, फिर स्वस्थ[d] करने वाले, भलाई

[a] **12.6** प्रभावशाली काम [b] **12.7** भलाई [c] **12.23** जिस्म [d] **12.28** चंगा

करने वाले, प्रबन्ध करने वाले, तरह-तरह
की भाषा बोलने वाले। 29 क्या सब प्रेरित हैं?
क्या सब नबी हैं? क्या सब सामर्थ के काम
करने वाले हैं? 30 क्या सब को स्वस्थ करने
का वरदान मिला है? क्या सब तरह-तरह की
भाषा बोलते हैं? क्या सब अनुवाद करते हैं
31 तुम बड़े से बड़े वरदान की धुन में लगे
रहो। लेकिन मैं तुम्हें सब से बढ़िया रास्ता
बतलाता हूँ।

13 यदि मैं इन्सानों और स्वर्गदूतों की
भाषाओं में बोलूँ, लेकिन मेरे पास
प्रेम न हो, तो मैं ठन-ठन करने वाला पीतल
और झनझनाती झाँझ की तरह हूँ। 2 यदि मैं
नबूवत कर सकूँ और सारे भेद और ज्ञान की
बातें जान लूँ और पहाड़ों को हटाने लायक
विश्वास भी मेरे पास हो, लेकिन प्रेम न हो तो
मैं कुछ भी नहीं। 3 यदि मैं अपना सब कुछ
दान कर डालूँ और अपनी देह को जलाए
जाने के लिए दे दूँ, लेकिन दूसरों से प्रेम न
रखूँ तो मुझे कुछ फ़ायदा नहीं।
4 प्रेम धीरज रखता है। दयालु है। यह जलन
नहीं रखता। डींगें नहीं मारता, न हीं घमण्ड
करता है। 5 बद्तमीज़ी नहीं करता, अपना
फ़ायदा नहीं देखता, झल्ला नहीं उठता, लोगों
द्वारा पहुँचायी चोटों का लेखा जोखा नहीं
रखता। 6 अन्याय से खुश नहीं होता, लेकिन
सच्चाई से खुश होता है। 7 यह सब कुछ सह
लेता है। सब बातों में हमेशा भरोसा रखता
है, सब बातों की आशा रखता है। सब कुछ
सहता जाता है।
8 प्रेम कभी खत्म नहीं होता है। नबूवतें
हों, तो समाप्त हो जाएँगी, भाषाएँ हों तो
जाती रहेंगी। यदि ज्ञान है तो उसका अन्त
हो जाएगा। 9 इसलिए कि हमारा ज्ञान और
हमारी नबूवतें भी अधूरी हैं। 10 लेकिन जब
पूर्णता आ जाएगी, तब अधूरेपन का अन्त हो
जाएगा। 11 जब मैं बच्चा था, बच्चों का सा मन
था, उन्हीं की तरह बातें करता था और उन्हीं
की तरह सोच थी, लेकिन जवान हो जाने
पर मैंने बच्चों वाली सारे हरकतें छोड़ दीं।
12 अभी हमें दर्पण[a] में धुंधला सा दिखता है,
लेकिन उस समय हम आमने सामने देखेंगे।
अभी हमारा ज्ञान अधूरा है, लेकिन बाद में
हमारा ज्ञान पूरा होगा, जैसे परमेश्वर मुझे
पूरी तरह से जानते हैं।
13 लेकिन अब विश्वास, आशा, प्रेम ये
तीनों हमेशा बने रहने वाले हैं, लेकिन इन
में सब से बड़ा प्रेम है।

14 प्रेम का पीछा करते हुए आत्मिक
वरदानों की धुन में लगे रहो,
खासकर यह कि तुम भविष्यवाणी करो।
2 जो अन्य भाषा में बोलता है वह लोगों
से नहीं लेकिन परमेश्वर से बातें करता
है, क्योंकि दूसरा कोई उसको नहीं समझ
पाता। वह आत्मा में भेद की बातें कहता है।
3 लेकिन भविष्यवाणी करने वाला आत्मिक
विकास की, सिखाने की तथा हिम्मत बढ़ाने
वाली बातें लोगों से कहता है। 4 जो अन्य
भाषा में बोलता है, उसकी खुद की आत्मिक
उन्नति होती है। लेकिन जो भविष्यवाणी
करता है, वह चर्च की उन्नति करता है। 5 मेरी
कामना तो यह है कि तुम सभी अन्य भाषाओं
में बोलो, लेकिन इस से अधिक यह कि
भविष्यवाणी करो। यदि अन्य भाषा बोलने

[a] **13.12** शीशे

वाला चर्च की उन्नति के लिए अनुवाद नहीं
करता है तो भविष्यद्वाणी करने वाला अन्य
भाषा बोलने वाले से बढ़ कर है।
6 इसलिए हे भाईयो-बहनो, यदि मैं तुम्हारे
पास आकर अन्य भाषाओं में बोलूँ और
प्रकाश, ज्ञान, नबूवत या कुछ सीख न दूँ, तो
तुम्हें मुझ से क्या फ़ायदा होगा? 7 इसी तरह
यदि बेजान चीजें भी जिन से संगीत निकलता
है, जैसे बाँसुरी या बीन, यदि उनके स्वरों में
अन्तर न हो तो जो फूँका या बजाया जाता है,
कैसे पहिचाना जाएगा? 8 यदि तुरही का शब्द
साफ़ न हो, तो लड़ाई के लिए तैयारी कौन
करेगा? 9 इसी तरह से तुम भी अगर अपने
मुँह से साफ़ तरीके से बातें न करो, तो जो
कहा जाता है, उसे लोग कैसे समझेंगे? तुम
तो हवा से बातें करने वाले समझे जाओगे।
10 हमें नहीं पता कि इस दुनिया में कितनी
तरह की भाषाएँ हैं, लेकिन उन में से कोई भी
बिना मतलब की नहीं होगी। 11 यदि मैं किसी
भाषा का मतलब न समझूँ, तो मैं बोलने
वाले के लिए विदेशी और बोलने वाला मेरे
लिए विदेशी ठहरेगा। 12 इसलिए जब कि तुम
आत्मिक वरदानों की धुन में हो, चर्च की
आत्मिक बढ़त का ध्यान रखो।
13 इसलिए जो कोई अन्यभाषा में बोलता
है, प्रार्थना करे, कि वह उसका अनुवाद भी
कर सके। 14 इसलिए कि जब मैं अन्य भाषा
में प्रार्थना करता हूँ, मेरी आत्मा प्रार्थना करती
है, लेकिन बुद्धि काम नहीं देती। 15 तो मुझे
करना क्या चाहिए? मैं अपनी आत्मा और
अपने दिमाग[a] दोनों ही से प्रार्थना करूँगा।
मैं आत्मा से भी गाऊँगा और समझते बूझते
हुए भी गाऊँगा। 16 नहीं तो, यदि तुम अपनी
आत्मा से[b] स्तुति करोगे तो जो तुम्हारी सुनता
है समझ न पा सकने के कारण, सहमति कैसे
प्रगट करेगा? क्योंकि वह नहीं जानता कि
तुम क्या कहते हो? 17 इसलिए कि तुम तो
अच्छी तरह से धन्यवाद दे रहे हो, लेकिन
सुनने वाले की कुछ भी उन्नति नहीं होती।
18 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि
तुम सब से ज़्यादा मैं अन्य भाषा में बोलता हूँ।
19 फिर भी चर्च में अन्य भाषा में दस हज़ार
शब्दों के बजाए अपनी बुद्धि से पाँच शब्द
कहना बेहतर समझता हूँ, ताकि दूसरों को
सिखा सकूँ।
20 भाईयो-बहनो, बच्चों की तरह सोच मत
रखो। लेकिन बुराई में शिशुओं की तरह बनो।
समझ में ज़रूर सयाने बनो। 21 नियमशास्त्र में
लिखा है, “मैं इन लोगों से अन्य भाषाओं और
परदेशियों के ओठों से बातें करूँगा, इसके
बावजूद भी ये लोग मेरी न सुनेंगे” यह प्रभु
कहते हैं।
22 इसलिए अन्यभाषाएँ विश्वासियों के
लिए नहीं, लेकिन अविश्वासियों के लिए
एक चिन्ह हैं, लेकिन नबूवत[c] विश्वासियों
के लिए चिन्ह है, अविश्वासियों के लिए
नहीं। 23 इसलिए जब पूरा चर्च इकट्ठा हो
और सभी अन्य भाषाओं में बोलें, तभी
अविश्वासी और इन बातों को न जानने
वाले आ जाएँ, तो क्या वे तुम्हें पागल नहीं
समझेंगे? 24 लेकिन यदि सभी भविष्यवाणी[d]
दें और एक अविश्वासी या अनजान
व्यक्ति भीतर आए वह तो सब उसे दोषी
ठहरा देंगे और सभी उसे परख लेंगे 25 उसके
मन की बातें प्रगट हो जाएँगी। वह अपने
मुँह के बल गिर कर परमेश्वर की आराधना
करते हुए कहेगा, “सचमुच परमेश्वर तुम्हारे
बीच में हैं।”
26 इसलिए भाईयो-बहनों तुम्हें करना क्या
चाहिए? जब कभी तुम जमा होते हो, प्रत्येक

[a] **14.15** बुद्धि [b] **14.16** अन्य भाषा में [c] **14.22** भविष्यवाणी [d] **14.24** आत्मा प्रेरित संदेश

के पास एक गीत[a], कुछ सीख[b], प्रकाश, अन्यभाषा, अन्यभाषा का अर्थ होना चाहिए। सब कुछ इसलिए किया जाए कि चर्च की तरक्की हो सके। 27 यदि कोई अन्यभाषा में बोलना चाहे तो एक सभा में दो या तीन बारी-बारी से ही बोलें। साथ ही कोई जन उसका अनुवाद करे। 28 किन्तु यदि अनुवादक न हो तो वह चर्च में खामोश रहे और स्वयं से तथा परमेश्वर से बोले[c]।

29 नबियों में से दो या तीन ही बोलें, दूसरे लोग परखें। 30 लेकिन अगर वहाँ बैठे किसी दूसरे पर परमेश्वरीय प्रकाशन हो तो पहला चुप हो जाए। 31 क्योंकि तुम सब एक-एक करके नबूवत कर सकते हो, जिस से सभी सीखें और सब को शान्ति मिले। 32 नबियों की आत्माएँ नबियों के नियंत्रण में होती हैं। 33 क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी के नहीं, लेकिन शान्ति के परमेश्वर हैं, जैसा कि पवित्र लोगों के चर्च[d] में है।

34 चर्च में महिलाएँ चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने की इज़ाज़त[e] नहीं है। वे अधीनता से रहें, जैसा कि नियमशास्त्र भी कहता है। 35 यदि वे कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि एक महिला के लिए चर्च में बोलना[f] शर्म की बात है।

36 क्या परमेश्वर का वचन तुम्हारे यहाँ ही से बाहर ले जाया गया? या केवल तुम्हें ही सुनाया गया? 37 यदि कोई अपने आपको नबी या आत्मिक[g] समझता है, तो वह यह जान ले कि जो मैं लिख रहा हूँ वह प्रभु की आज्ञा है। 38 परन्तु यदि कोई इसे न माने, तो उसकी भी न मानी जाए।

39 इसलिए हे भाईयो-बहिनो, भविष्यवाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने वाले को मना मत करो। 40 फिर भी सब कुछ उचित तरीके[h] और क्रम से किया जाए।

15 हे भाईयो-बहनो, मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि, मैंने तुम्हें सु-संदेश सुनाया, तुमने उसे अपना लिया और उसी में बने भी हो। 2 यदि इस संदेश पर तुम्हारा विश्वास बना रहे[i] तो यही तुम्हें मुक्ति देता है-नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना बेकार ठहरा।

3 जो बात मुझ तक पहुँची थी, मैंने उसे सब से ज़रूरी जान कर तुम तक पहुँचायी, वह यह कि पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे अपराधों के लिए मरे, 4 गाड़े गए और पवित्रशास्त्र के अनुसार ही तीसरे दिन जी भी उठे। 5 वह कैफ़ा को और फिर बारहों को दिखायी दिए। 6 उसके बाद वह पाँच सौ से ज़्यादा भाईयो-बहनों को एक ही समय में दिखे, जिन में से अधिकतर लोग अभी जीवित हैं, हालांकि कुछ मर चुके हैं। 7 तब वह याकूब को दिखायी दिए और फिर सब प्रेरितों को। 8 सब से आखिर में उन्होंने मुझे दर्शन दिया, जो मानो समय से पहले पैदा हुआ हो।

9 मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूँ और प्रेरित कहलाने के लायक भी नहीं, इसलिए कि मैंने परमेश्वर के चर्च को पीड़ा दी थी। 10 लेकिन परमेश्वर की अपार कृपा[j] से मैं अब जो हूँ सो हूँ। मेरे लिए प्रभु का अनुग्रह बेकार नहीं रहा। लेकिन मैंने उन सब की तुलना में सब से अधिक प्रचार किया। इस में भी मेरा

---

[a] **14.26** भजन [b] **14.26** उपदेश [c] **14.28** या बातें करें [d] **14.33** सब कलीसियाओं [e] **14.34** आज्ञा [f] **14.35** बातें करना [g] **14.37** आत्मा से चलने वाला [h] **14.40** शालीनता [i] **15.2** या मज़बूती से थामे रहो [j] **15.10** अनुग्रह

कुछ नहीं, यह उनकी कृपा का परिणाम था।
11 इसलिए चाहे मैं या वे, हम यही आनन्द
का संदेश देते हैं और इसी पर तुमने विश्वास
किया है।
12 अब यदि मसीह के बारे में यह संदेश
सुनाया जाता है, कि वह मरे हुओं में से
जिलाए गए हैं, तो फिर तुम में से कुछ मरे
हुओं के जिलाए जाने का इन्कार क्यों करते
हैं? 13 यदि मरे हुओं का जिलाया जाना है ही
नहीं, तो मसीह भी नहीं जिलाए गए। 14 यदि
मसीह जिलाए नहीं गए तो हमारा सुसंदेश
देना और तुम्हारा उस पर विश्वास लाना
दोनों ही बेकार है। 15 यही नहीं हम परमेश्वर
के झूठे गवाह ठहरे, क्योंकि हम ने परमेश्वर
के बारे में गवाही दी कि उन्होंने यीशु को
जिलाया। लेकिन यदि मरे लोग जिलाए नहीं
जाते हैं तो परमेश्वर ने मसीह यीशु को
भी नहीं जिलाया होता। 16 क्योंकि यदि मरे
हुए जिलाए नहीं जाते, तो मसीह भी जिलाए
नहीं गए। 17 यदि मसीह को जिलाया नहीं
गया, तो तुम्हारा विश्वास लाना बेकार है
और तुम अभी तक अपने गुनाहों[a] के कारण
सज़ा के अधीन हो। 18 इसके अलावा मसीह
पर विश्वास लाने के बाद जो लोग मरे, वे
भी नाश हो गए। 19 इसलिए यदि मसीह पर
हमारी आशा केवल इस जीवन के लिए ही है,
तो दुनिया में हम लोग सचमुच सब से अधिक
दुखी लोग होंगे। 20 लेकिन मसीह सचमुच मरे
हुओं में से जिलाए गए हैं और जो सो गए हैं,
उन में वह पहिले फल हैं।
21 इसलिए कि जब एक इन्सान के द्वारा
मौत आयी, मरे हुओं का जी उठना[b] भी
एक इन्सान से ही हुआ। 22 जिस तरह से
हर इन्सान मरता है क्योंकि हम सभी आदम
से हैं, हर वह इन्सान जो मसीह का है, उसे
जिला दिया जाएगा। 23 लेकिन जिलाए जाने
में भी क्रम है, फ़सल के पहले हिस्से की
तरह मसीह का जी उठना था। मसीह के आने
पर वे जी उठेंगे जो उनके हैं। 24 उसके बाद
अन्त आ जाएगा, उस समय वह सारे शासन,
अधिकार और सामर्थ को समाप्त करके राज्य
को परमेश्वर पिता के सुपुर्द कर देंगे। 25 जब
तक मसीह अपने सारे दुश्मनों को अपने पैरों
तले न ले आएँ, उनका राज्य करना ज़रूरी
है 26 सब से आखिरी दुश्मन जिस का अन्त
किया जाएगा, वह मौत है। 27 इसलिए कि
परमेश्वर ने सब कुछ मसीह के अधीन कर
दिया है।" इसलिए जब कि लिखा है, "सब
कुछ" उनके अधीन कर दिया गया है, तो
स्पष्ट है कि इस में वह नहीं हैं जिन्होंने सब
कुछ मसीह के अधीन कर दिया। 28 जब सब
कुछ उनके[c] अधीन हो जाएगा जिन्होंने सब
कुछ उनके[d] अधीन कर दिया, ताकि सब
जगह, सब बातों[e] में परमेश्वर ही सब कुछ
हों तब पुत्र भी खुद उनके अधीन हो जाएगा।
29 नहीं तो जो लोग मर चुके लोगों के लिए
बपतिस्मा लेते हैं, उनका क्या? यदि मरे हुओं
का जी उठना नहीं है, तो फिर उनके लिए
बपतिस्मा क्यों लिया जाता है? 30 हर दिन
हम क्यों जोखिम का सामना करते हैं। 31 हे
भाईयो-बहनो, मेरे उस घमण्ड की वजह से
जो मसीह यीशु में हमारे प्रभु में तुम्हारे लिए
है, मैं यह पुख्ता तरीके से कहता हूँ कि मौत
हर रोज़ मेरे सामने खड़ी रहती है 32 यदि मरे
हुओं का जी उठना है ही नहीं, तो इफ़िसुस में
जंगली जानवरों से संघर्ष करने से क्या लाभ
था? और यह भी कि "आओ, खाएँ-पीएँ,
क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे।"
33 धोखे में मत रहो, "बुरी संगति अच्छे
चालचलन को बिगाड़ देती है।" 34 भलाई

[a] 15.17 अपराधों [b] 15.21 पुनरूत्थान [c] 15.28 परमेश्वर के [d] 15.28 यीशु के [e] 15.28 दायरों, क्षेत्रों

और भक्ति के लिए जाग उठो, अपने
अपराध में जीना बंद करो। कुछ लोग ऐसे
हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते-यह मैं तुम्हें
शर्मिन्दा करने के लिए कह रहा हूँ।
35 कोई कह सकता है, "मुर्दे किस तरह जी
उठते हैं? किस तरह की देह के साथ वे जी
उठेंगे? 36 क्या मूर्खता का सवाल है! जब तुम
एक बीज ज़मीन में बोते हो, जब तक वह
मरता नहीं, उसमें से पौधा नहीं निकलता।
37 और जो तुम बोते हो, यह वह देह नहीं
जो उत्पन्न होने वाली है, लेकिन सिर्फ़ दाना
ही है। चाहे वह किसी भी अनाज का दाना
हो। 38 लेकिन परमेश्वर अपनी इच्छा के
अनुसार उसको देह देते हैं। हर एक बीज के
पास उसकी अलग किस्म की देह होती है।
39 सभी देह एक सी नहीं है, लेकिन मनुष्यों
की देह, पशुओं की देह, पक्षियों की देह
और मछलियों की देह सभी में अन्तर है।
40 स्वर्गिक देह है और पृथ्वी की भी। लेकिन
स्वर्गिक देह के तेज और पृथ्वी की देह के
तेज में अंतर है। 41 सूर्य, चन्द्रमा और तारों
का तेज एक सा नहीं है[a]।
42 मरे हुओं का जी उठना भी ऐसा ही
है। देह नाशमान स्थिति में बोयी जाती है
और अविनाशी स्थिति में जी उठती है।
43 बेइज़्ज़ती[b] के साथ देह बोयी जाती है
और तेज[c] के साथ जी उठती है। कमज़ोरी
के साथ बोयी जाती है और शक्ति के
साथ जी उठती है। 44 स्वाभाविक देह बोयी
जाती है, लेकिन आत्मिक देह जी उठती है।
इसलिए कि स्वाभाविक देह है, आत्मिक
देह भी है। 45 ऐसा लिखा भी है, कि पहला
इन्सान अर्थात् आदम, जीवित प्राणी बना
और आखिरी आदम जीवन देने वाला आत्मा
बना। 46 पहले स्वाभाविक था, आत्मिक
नहीं था। बाद में आत्मिक हुआ। 47 पहला
इन्सान धरती अर्थात् मिट्टी का था, दूसरा
स्वर्गिक है। 48 जैसे वह मिट्टी का था, वैसे
ही दूसरे मिट्टी के हैं। जैसा वह स्वर्गिक हैं,
वैसे ही और भी स्वर्गिक हैं। 49 जैसे हम ने
उसका रूप पाया जो मिट्टी का था, वैसे ही
उस स्वर्गिक का रूप भी पाएँगे।
50 हे भाईयो-बहनो, मैं यह कहता हूँ कि
मांस और खून परमेश्वर के राज्य के
हकदार[d] नहीं हो सकते और न विनाश
अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
51 देखो, मैं तुम से रहस्य की बात कह
रहा हूँ, कि हम सभी सोएँगे नहीं, लेकिन
सभी बदल जाएँगे। 52 और यह पल भर
में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूँकते
ही होगा, क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और
मुर्दे अविनाशी हालत में उठाए जाएँगे और
हम बदल जाएँगे। 53 क्योंकि इस नाशमान
को अविनाशी और मरणशील को अमरता
को पहनना ज़रूरी है। 54 लेकिन जब यह
नाशमान, अविनाश को पहन लेगा और यह

[a] **15.41** क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में फ़र्क है [b] **15.43** अनादर [c] **15.43** महिमा [d] **15.50** उत्तराधिकारी

मरणशील अमरता को पहन लेगा, तब यह
लिखित वचन पूरा हो जाएगा, “मौत को
विजय ने निगल लिया है।”
55 हे मौत, “तुम्हारी जीत कहाँ है”? हे मौत,
तुम्हारा डंक कहाँ?”
56 मौत का डंक तो अपराध है और
अपराध की ताकत[a] व्यवस्था[b] है 57 लेकिन
परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमें प्रभु यीशु
मसीह के द्वारा विजयी करते हैं
58 इसलिए हे मेरे प्यारे भाईयो-बहनो,
मज़बूत बने रहो तथा यीशु के काम में हमेशा
बढ़ते जाओ, क्योंकि तुम्हें यह मालूम है कि
तुम्हारी मेहनत प्रभु में बेकार नहीं है।

16 अब उस दान के बारे में जो पवित्र
लोगों के लिए किया जाता है। तुम
वैसा ही करो जैसा मैंने गलातिया के चर्च को
करने के लिए कहा था। 2 हर एक जन अपनी
आमदनी के आधार पर सप्ताह के पहले दिन
अपने पास कुछ बचा कर रखे। तब मेरे आने
पर तुम्हें इकट्ठा नहीं करना पड़ेगा। 3 मेरे आने
पर, तुम्हारा दान यरूशलेम पहुँचाने के लिए,
जिन्हें तुम कहोगे, उन्हें चिट्ठियाँ देकर भेज
दूँगा। 4 यदि मेरा जाना भी ज़रूरी हुआ तो वे
मेरे साथ जाएँगे।
5 और मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास
आऊँगा, क्योंकि मुझे मकिदुनिया होकर
जाना भी है। 6 यह भी हो सकता है कि तुम्हारे
यहाँ ही ठहर जाऊँ और सर्दी तुम्हारे यहाँ
ही काटूँ। फिर जिधर मेरा जाना तय हो, तुम
मुझे पहुँचा दो। 7 क्योंकि मैं अब रास्ते में तुम
से नहीं मिलना चाहता, लेकिन मेरी उम्मीद
है, कि यदि प्रभु चाहें तो कुछ समय तक
तुम्हारे साथ रहूँगा। 8 लेकिन पेन्टिकॉस्ट तक
मैं इफ़िसुस में रहूँगा। 9 क्योंकि मेरे लिए एक
बड़ा और फ़ायदेमंद दरवाज़ा खुला है और
खिलाफ़त करने वाले[c] कई हैं।
10 तुम्हारे यहाँ तीमुथियुस के आने पर
ध्यान देना कि वह तुम्हारे यहाँ बिना किसी
डर के रहे, क्योंकि वह मेरी तरह प्रभु का
काम करता है। 11 इसलिए कोई उसे तुच्छ
न समझे, लेकिन कुशल से इस तरफ़ पहुँचा
देना कि मेरे पास आ जाए, क्योंकि मैं उसका
इन्तज़ार कर रहा हूँ कि वह भाईयों के साथ
आए।
12 भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत कहा है
कि भाईयों के साथ वह तुम्हारे पास जाए।
लेकिन इस समय उसने जाने की इच्छा प्रगट
नहीं की। समय आने पर वह आ जाएगा।
13 सतर्क रहो, विश्वास में मज़बूत रहो,
लोगों की मदद करो, शक्तिशाली बनो।
14 सब कुछ प्रेम से करो।
15 हे भाईयो-बहनो, तुम स्तिफ़नास के
परिवार को जानते हो, कि वे अखाया के
पहले विश्वासी हैं। वे पवित्र लोगों की सेवा
के लिए तैयार रहते हैं। 16 इसलिए मैं यह
प्रार्थना करता हूँ कि ऐसों के अधीन रहो।
हर उस व्यक्ति के भी जो इस काम में कंधे
से कंधा मिला कर मेहनत करता है। 17 मैं
स्तिफ़नास फ़ूरतनातुस और अखइकुस के
आ जाने से खुश हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी
कमी को पूरा किया है। 18 उन्होंने मेरे और
तुम्हारे दिल को चैन दिया है, इसलिए ऐसों
को आदर दो।
19 एशिया के सभी चर्चों की तरफ़ से तुम्हें
सलाम। अक्विला और प्रिसिल्ला का और
उनके घर के चर्च का भी तुम को प्रभु में
बहुत आशीर्वाद। 20 सभी भाईयों का तुम को
सलाम। पवित्र आलिंगन से आपस में सलाम
करो

[a] **15.56** शक्ति [b] **15.56** यहूदी नियमशास्त्र या विवेक में दिया गया ज्ञान [c] **16.9** विरोधी

21 मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा
हुआ सलाम। यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे
तो वह दंडित हो।
22 हमारे प्रभु आने वाले हैं।
23 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता
रहे।
24 मसीह यीशु में मेरा प्रेम तुम सब को
मिले। ऐसा ही हो।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com